1 भाषा, लिपि और व्याकरण
(Language, Script and Grammar)

भाषा (Language)

बच्चो! सभी जीवों में केवल मानव ही एक ऐसा जीव है जो अपने विचारों अथवा भावों को आदान-प्रदान करने की क्षमता रखता है। सामाजिक प्राणी होने के कारण विचारों को आदान-प्रदान किए बिना मानव का कार्य नहीं चल सकता। इसलिए अपने मन के विचारों अथवा भावों को दूसरों तक पहुँचाने तथा उनके भावों को समझने के लिए भाषा का सहारा लिया गया है। अतएव,

भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम अपने भावों अथवा विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

भाषा के रूप (Kinds of Language)

भाषा के मुख्यतः दो रूप हैं :

1. मौखिक अथवा कथित भाषा
2. लिखित भाषा

1. मौखिक अथवा कथित भाषा (Spoken Language) : भाषा का वह रूप जिसके द्वारा हम अपने विचारों को बोलकर दूसरों तक पहुँचाते हैं और दूसरों के विचारों को सुनकर समझते हैं, उसे मौखिक भाषा कहते हैं। इसे कथित भाषा भी कहा जाता है; जैसे—वार्तालाप, काव्य पाठ, कहानी सुनाना, भाषण, समाचार-वाचन, वाद-विवाद, नाटक, रेडियो, दूरदर्शन आदि पर प्रसारित विभिन्न कार्यक्रम भाषा के मौखिक रूप हैं।

मौखिक भाषा स्थायी नहीं होती। यह भाषा का मूल रूप है। मनुष्य ने सबसे पहले इसे बोलना सीखा। भाषा के इस रूप का प्रयोग सबसे अधिक होता है।

2. लिखित भाषा (Written Language) : भाषा का वह रूप जिसके द्वारा हम अपने मन के विचारों अथवा भावों को लिखकर दूसरों के सामने प्रकट करते हैं और दूसरा उन विचारों अथवा भावों को पढ़कर समझता है, उसे लिखित भाषा कहते हैं; जैसे—पत्र, समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, लेख, कहानी, संस्मरण, तार आदि भाषा के लिखित रूप हैं।

भाषा का लिखित रूप अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से हम अपने विचारों को लाखों लोगों तक पहुँचा सकते हैं और दीर्घकाल तक सुरक्षित रख सकते हैं।

सांकेतिक भाषा (Symbolic Language) : संकेतों द्वारा भी हम अपने मन के विचारों अथवा भावों को व्यक्त कर सकते हैं। लेकिन भाषा का यह रूप अधिक प्रचलित नहीं है क्योंकि इसका प्रयोग विशेष परिस्थितियों में ही संभव है। गार्ड द्वारा 'हरी झंडी दिखाकर तथा सीटी बजाकर ड्राइवर को गाड़ी चलाने का संकेत करना, मूक-बधिर बच्चों का परस्पर वार्तालाप, माँ द्वारा मुँह पर अँगुली रखकर शोर न करने का संकेत करना आदि सांकेतिक भाषा के उदाहरण हैं।

सांकेतिक भाषा का व्याकरण में अध्ययन नहीं किया जाता।

याद रखिए

- सांकेतिक भाषा का प्रयोग सभी प्रकार के विचारों को प्रकट करने के लिए नहीं किया जा सकता। इसी कारण सांकेतिक भाषा को हिंदी व्याकरण में स्थान नहीं दिया गया है।
- मौखिक भाषा को सीखने की आवश्यकता नहीं होती जबकि लिखित भाषा को सीखने की आवश्यकता होती है।

विश्व की भाषाएँ (Languages of World)

विश्व में अनेक भाषाएँ प्रचलित हैं। प्रत्येक देश की अलग भाषा होती है। इसके माध्यम से वे अपने भाव तथा विचार दूसरे देश के नागरिकों के सामने व्यक्त करते हैं; जैसे—अंग्रेज़ी, जर्मन, रूसी, फ्रेंच, हिंदी, चीनी, स्पेनिश आदि भाषाएँ अलग-अलग देशों में बोली जाती हैं। विश्व में अंग्रेज़ी भाषा का प्रथम, हिंदी भाषा का दूसरा और अन्य भाषाओं का तीसरा स्थान है।

भारत की भाषाएँ (Languages of India)

भारत विविधताओं का देश है। यहाँ पर अनेक जाति व धर्म के लोग रहते हैं। यहाँ अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं; जैसे—महाराष्ट्र में मराठी, बंगाल में बंगाली, असम में असमी, केरल में मलयालम, तमिलनाडु में तमिल, गुजरात में गुजराती आदि। हमारे देश में बोली जाने वाली ऐसी बाईस (22) भाषाओं को संविधान में मान्यता प्रदान की गई है। हिंदी को राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा घोषित किया गया है।

भारतीय संविधान में मान्यता प्राप्त 22 भाषाएँ इस प्रकार हैं:

असमी	सिंधी	कन्नड़	उड़िया	कश्मीरी	कोंकणी	मराठी	
बंगाली	उर्दू	मणिपुरी	गुजराती	तेलुगु	डोगरी	संस्कृत	हिंदी
मलयालम	बोडो	तमिल	नेपाली	पंजाबी	संथाली	मैथिली	

मातृभाषा (Mothertongue) : मातृभाषा का शाब्दिक अर्थ है—माँ द्वारा या परिवार द्वारा बोली जाने वाली भाषा। बच्चा जिस परिवार में पलता व बड़ा होता है, उसी परिवार में बोली जाने वाली भाषा को वह सबसे पहले समझना व बोलना सीखता है। यही भाषा उसकी मातृभाषा कहलाती है। यदि माँ 'पंजाबी' बोलती है, तो बालक की मातृभाषा पंजाबी होगी।

राष्ट्रभाषा (National Language) : ऐसी भाषा जो देश में अधिकतम लोगों द्वारा बोली व समझी जाती है, वह उस देश की राष्ट्रभाषा कहलाती है। भारत में हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा का स्थान प्राप्त है।

प्रादेशिक भाषा (State Language) : किसी प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा प्रादेशिक भाषा कहलाती है; जैसे—

प्रदेश	भाषा
कश्मीर	कश्मीरी
कर्नाटक	कन्नड़
केरल	मलयालम
प० बंगाल	बंगाली
आंध्र प्रदेश	तेलुगु

प्रदेश	भाषा
पंजाब	पंजाबी
ओडिशा	उड़िया
तमिलनाडु	तमिल
हरियाणा	हरियाणवी
उत्तर प्रदेश	हिंदी

प्रदेश	भाषा
महाराष्ट्र	मराठी
गुजरात	गुजराती
मणिपुर	मणिपुरी
असम	असमिया
गोआ	कोंकणी, मराठी

राजभाषा (Official Language) : राजभाषा का अर्थ है—सरकारी भाषा। इससे तात्पर्य यह है कि सभी सरकारी काम-काज इसी भाषा में किए जाएँ। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की गई। इसलिए प्रतिवर्ष 14 सितंबर को पूरे देश में हिंदी-दिवस के रूप में मनाया जाता है।

यह भी जानिए

- अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी 'संपर्क भाषा' भी है।
- भारत की राजभाषा 'अंग्रेज़ी' तथा 'हिंदी' दोनों हैं। अमेरिका की राजभाषा 'अंग्रेज़ी' है।

बोली (Dialect)

भाषा का क्षेत्रीय रूप **बोली** कहलाता है।

बच्चो! बोली भाषा का अल्पविकसित रूप होता है। इसका प्रयोग सामान्यत: बोलचाल में ही किया जाता है। इसमें साहित्य

की रचना नहीं होती। इसका प्रयोग सीमित क्षेत्र में ही किया जाता है। ब्रज, भोजपुरी, अवधी, हरियाणवी, बुंदेली, बघेली, गढ़वाली, छत्तीसगढ़ी आदि हिंदी की प्रमुख बोलियाँ हैं।

उपभाषा : बोली की अपेक्षा उपभाषा कुछ अधिक विस्तृत क्षेत्र में प्रयुक्त होती है तथा उसमें साहित्य रचना भी होने लगती है। एक उपभाषा में एक से अधिक बोलियाँ होती हैं। उदाहरणार्थ—बिहारी-हिंदी, हिंदी की उपभाषा है तो मगही, मैथिली तथा भोजपुरी इसकी बोलियाँ हैं। इसी प्रकार पश्चिमी-हिंदी, हिंदी की उपभाषा है तो बुंदेली, कन्नौजी, ब्रज, बाँगरू इसकी बोलियाँ हैं। इस प्रकार भाषा के अंतर्गत कई उपभाषाएँ आती हैं और उपभाषा के अंतर्गत कई बोलियाँ। अतएव,

किसी प्रांत अथवा उपप्रांत की बोलचाल और साहित्यिक रचना की भाषा **उपभाषा** कहलाती है।

हिंदी की उपभाषाएँ एवं उनकी बोलियाँ (The Dialects of Hindi and Its Dialects)

हिंदी में ऐसी अनेक बोलियाँ हैं जो उपभाषा के अंतर्गत आती हैं। ये निम्न प्रकार से हैं :

पूर्वी हिंदी : अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी।
पश्चिमी हिंदी : ब्रज, खड़ी बोली, हरियाणवी, कन्नौजी, बुंदेली।
राजस्थानी : मेवाती, मारवाड़ी, जयपुरी, मालवी, हाड़ोती।
पहाड़ी : मंडियाली, गढ़वाली, कुमाऊँनी आदि।
मागधी : अंगिका, भोजपुरी, मैथिली, मगही आदि।
बिहारी : भोजपुरी, मगधी, मैथिली आदि।

'सूरदास' कृत 'सूरसागर' की रचना ब्रजभाषा में हुई है। 'तुलसीदास' का अमर काव्य 'रामचरितमानस' और 'मलिक मुहम्मद जायसी' कृत 'पद्मावत' की रचना अवधी भाषा की अमूल्य देन है। 'विद्यापति' की 'पदावली' मैथिली भाषा की अमर कृति है।

लिपि (Script)

बच्चो! जैसा कि आप पढ़ चुके हैं कि बोलते समय हमारे मुख से अनेक ध्वनियों का उच्चारण होता है। मुख से उच्चरित इन ध्वनियों को लिखित रूप प्रदान करने के लिए कुछ विशेष ध्वनि-चिह्नों का सहारा लिया जाता है। इन ध्वनि-चिह्नों को लिखने की विधि को लिपि कहा जाता है। अतएव,

किसी भाषा की उच्चरित ध्वनियों को लिखने की विधि **लिपि** कहलाती है।

सभी भाषाओं की लिपियाँ एक-सी नहीं होतीं। प्रत्येक भाषा की अपनी एक लिपि होती है। एक से अधिक भाषाओं की एक लिपि हो सकती है; जैसे—

भाषा	लिपि
हिंदी	देवनागरी
संस्कृत	देवनागरी
मराठी	देवनागरी
कश्मीरी	देवनागरी

भाषा	लिपि
नेपाली	देवनागरी
संथाली	देवनागरी
बोडो	देवनागरी
अंग्रेज़ी	रोमन

भाषा	लिपि
जर्मन	रोमन
फ्रांसीसी	रोमन
उर्दू	फ़ारसी
पंजाबी	गुरुमुखी

याद रखिए

- देवनागरी लिपि का विकास 'ब्राह्मी लिपि' से हुआ है। यह लिपि बाईं से दाईं ओर लिखी जाती है।
- फ़ारसी लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती है।
- कंप्यूटर पर 'यूनीकोड' द्वारा देवनागरी में लिखे हुए लेख का किसी भी भाषा में अनुवाद किया जा सकता है।

व्याकरण (Grammar)

बच्चो! आप पिछली कक्षाओं में पढ़ चुके हैं कि वर्णों के व्यवस्थित मेल से शब्द, शब्दों के व्यवस्थित मेल से वाक्य तथा वाक्यों के व्यवस्थित मेल से भाषा बनती है। यदि ये व्यवस्थित न हों, तो भाषा अर्थपूर्ण नहीं होगी। किस वर्ण, शब्द तथा

वाक्य का प्रयोग कहाँ और किस तरह करना है, इसका ज्ञान व्याकरण कराता है अर्थात् व्याकरण भाषा के नियम निर्धारित करता है। अतएव,

व्याकरण वह शास्त्र है, जो भाषा के शुद्ध रूप व प्रयोग का ज्ञान कराता है।

इन वाक्यों को पढ़िए और समझिए :

- ❖ मुझे एक काटकर सेब दो। — अशुद्ध वाक्य
- ❖ मुझे एक सेब काटकर दो। — शुद्ध वाक्य
- ❖ आज उसकी खराब दिशा है। — अशुद्ध वाक्य
- ❖ आज उसकी दशा खराब है। — शुद्ध वाक्य

अब आप भली प्रकार समझ गए होंगे कि भाषा और व्याकरण का गहरा संबंध है। व्याकरण के अभाव में भाषा का सही ज्ञान होना असंभव है। व्याकरण के नियमों से ही उपर्युक्त वाक्यों के शुद्ध और अशुद्ध होने का बोध हो रहा है।

अतएव, प्रत्येक भाषा का अपना व्याकरण होता है। व्याकरण भाषा के नियम बनाता है। इन नियमों के ज्ञान से ही हम भाषा को शुद्ध बोलना, पढ़ना व लिखना सीखते हैं।

व्याकरण के अंग (Parts of Grammar)

वर्ण, शब्द, वाक्य-रचना तथा उनके विश्लेषण के आधार पर व्याकरण के तीन अंग बनाए गए हैं, जो इस प्रकार हैं :

1. वर्ण-विचार 2. शब्द-विचार 3. वाक्य-विचार

1. वर्ण-विचार (Phonology) : व्याकरण के इस अंग में वर्णों के स्वरूप, उनके वर्गीकरण, उच्चारण आदि का अध्ययन किया जाता है।

2. शब्द-विचार (Morphology) : व्याकरण के इस अंग में शब्दों के स्वरूप, उनके भेद, लिंग, वचन, रचना आदि का अध्ययन किया जाता है।

3. वाक्य-विचार (Syntax) : व्याकरण के इस अंग में वाक्यों की रचना, वाक्य के भेद, वाक्य-विश्लेषण आदि का अध्ययन किया जाता है।

साहित्य (Literature)

किसी भाषा के संचित ज्ञानकोश को **साहित्य** कहा जाता है।

साहित्य में ज्ञान व अनुभव की बातें निहित होती हैं। समय-समय पर विद्वानों, शिक्षाविदों तथा ऋषियों के विचार एवं अनुभव ज्ञान के आधार पर हमारे समक्ष प्रकट होते रहते हैं। विद्वानों, ऋषियों का चिंतन समाज के विकास का स्रोत होता है। यही साहित्य कहलाता है।

साहित्य के प्रकार (Types of Literature)

साहित्य दो प्रकार का होता है :

1. गद्य साहित्य (Prose Literature) : जब साहित्यकार साधारण रूप से बोलचाल की भाषा में अपने विचार व्यक्त करते हैं, तो वह गद्य साहित्य कहलाता है। इसमें तुकबंदी अथवा लय का अभाव होता है। पत्र, निबंध, लेख, कहानी, कथा, संस्मरण, नाटक, उपन्यास, जीवनी आदि 'गद्य साहित्य' के उदाहरण हैं।

आपकी पाठ्य पुस्तक 'कालिंदी' में अतिथि देवो भव (ललित निबंध), नमक का दारोगा (कहानी), हिमपात (संस्मरण), नचिकेता (पौराणिक कथा) आदि सभी गद्य साहित्य के अंश हैं।

2. पद्य साहित्य (Verse Literature) : जब साहित्यकार अपने विचार तुकबंदी अथवा लय द्वारा व्यक्त करते हैं, तब वह पद्य साहित्य कहलाता है; जैसे—

कुछ काम करो कुछ काम करो
जग में रहकर कुछ नाम करो।
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो!
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो।
कुछ तो उपयुक्त करो तन को।

समझिए

बच्चो! सामने दी गई काव्य पंक्तियाँ राष्ट्रकवि 'मैथिलीशरण गुप्त' द्वारा रचित हैं। ये काव्य पंक्तियाँ 'पद्य साहित्य' का उदाहरण हैं। दोहा, छंद, कविता, सोरठा, गीत, दोहे आदि भी 'पद्य साहित्य' के उदाहरण हैं।

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस, जयशंकर प्रसाद की कामायनी, हरिवंशराय बच्चन की मधुशाला, रामधारी सिंह 'दिनकर' की शक्ति और क्षमा आदि 'पद्य' रचनाएँ हैं।

आओ दोहराएँ

- भाषा भावों अथवा विचारों के आदान-प्रदान का साधन है।
- भाषा के दो रूप हैं: मौखिक भाषा, लिखित भाषा।
- जिस भाषा का प्रयोग देश के कार्यालयों में काम-काज के लिए होता है, वह राजभाषा कहलाती है।
- उच्चरित ध्वनियों को लिखने की विधि लिपि कहलाती है।
- व्याकरण भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान व प्रयोग सिखाता है।

अब बताइए

❖ बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple Choice Questions)

1. दिए प्रश्नों के सही उत्तर के सामने (✓) चिह्न लगाइए :

क. हम अपने भावों अथवा विचारों का आदान-प्रदान किसके द्वारा करते हैं?
(a) लिपि ☐ (b) बोली ☐ (c) भाषा ☐ (d) साहित्य ☐

ख. भारत में सभी कार्यालयी काम-काज किस भाषा में किए जाते हैं?
(a) हिंदी तथा अंग्रेज़ी में ☐ (b) हिंदी में ☐ (c) अंग्रेज़ी में ☐ (d) रोमन में ☐

ग. देवनागरी लिपि किस प्रकार लिखी जाती है?
(a) दाईं से बाईं ओर ☐ (b) बाईं से दाईं ओर ☐ (c) ऊपर से नीचे ☐ (d) नीचे से ऊपर ☐

घ. विश्व में हिंदी भाषा का कौन-सा स्थान है?
(a) दूसरा ☐ (b) चौथा ☐ (c) पहला ☐ (d) तीसरा ☐

ङ. भाषा का क्षेत्रीय रूप क्या कहलाता है?
(a) लिपि ☐ (b) उपभाषा ☐ (c) बोली ☐ (d) साहित्य ☐

2. निम्नांकित स्थितियों में भाषा के किस रूप का प्रयोग होता है?

क. सड़क पर दो बच्चों का झगड़ना _____
ख. नानी का बच्चों को कहानी सुनाना _____
ग. समाचार पत्र में प्रकाशित विज्ञापन _____
घ. छात्रों द्वारा प्रश्न पत्र हल करना _____

3. सोचकर उत्तर लिखिए :

क. भाषा किसे कहते हैं? इसके मुख्य रूप कौन-कौन से हैं? सोदाहरण लिखिए।
ख. राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा में अंतर स्पष्ट कीजिए।
ग. बोली और उपभाषा में अंतर स्पष्ट कीजिए।
घ. लिपि किसे कहते हैं? हिंदी, संथाली, जर्मन, उर्दू भाषा की लिपि लिखिए।